

Prepared by

Dr. Md.Haider Ali, Assistant Professor

Dept.of History, R.B.G. R. College

Maharajganj, JPU, Chapra

Question: Discuss the Impact of the World War II(द्वितीय विश्वयुद्ध: 1939-1945).

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम प्रथम विश्वयुद्ध से अधिक निर्णायक हुए. इसके सिर्फ विनाशकारी प्रभाव ही नहीं हुई, बल्कि कुछ प्रभाव ऐसी भी है जिससे विश्व इतिहास की धारा बदल गई तथा एक नए विश्व का उदय और विकास हुआ. द्वितीय विश्वयुद्ध के निम्नलिखित परिणाम हुए

धन-जन का भीषण संघार

द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रथम विश्वयुद्ध की तुलना में धन-जन की अधिक क्षति हुई. एक अनुमान के अनुसार, इस युद्ध में दोनों पक्षों के 5 करोड़ से अधिक लोग मारे गए जिनमें सर्वाधिक संख्या सोवियतों की थी. लाखों बेघर हो गए. इससे पुनर्वास की समस्या उठ खड़ी हुई. लाखों यहूदियों की हत्या कर दी गई. घायलों की गिनती ही नहीं की जा सकती थी. परमाणु बम से हिरोशिमा और नागासाकी पूरी तरह नष्ट हो गए. इसी प्रकार युद्ध में बेहिसाब संपत्ति भी नष्ट हुई. अनुमान था सिर्फ इंग्लैंड में करीब 2000 करोड़ रुपए मूल्य की संपत्ति नष्ट हुई. सोवियत संघ की संपूर्ण राष्ट्रीय संपत्ति का चौथा भाग युद्ध की भेंट चढ़ गया. इतना विनाशकारी युद्ध पहले कभी नहीं हुआ था.

औपनिवेशिक युग का अंत

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सभी साम्राज्यवादी राज्यों को एक-एक कर अपनी उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा. उपनिवेशों में राष्ट्रीयता की लहर तेज हो गई. स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गए. फलतः एशिया के अनेक देश यूरोपीय दासता से मुक्त हो गए. यूरोपीय राष्ट्रों की शक्ति और साधन इतने कमजोर हो गए कि वह उपनिवेशों पर अपना कब्जा जमाए रखने में सक्षम नहीं रहे इसलिए वर्मा, मलाया इत्यादि स्वतंत्र हो गए. 1947 में भारत भी अंग्रेजी दासता से मुक्त हो गया.

फासीवादी शक्तियों का सफाया

युद्ध में पराजित होने के बाद धुरी राष्ट्रों के दुर्दिन आ गए. जर्मन साम्राज्य का बड़ा भाग उससे छिन गया. इटली को भी अपने सभी अप्रिीकी उपनिवेश खोने पड़े. जापान को भी उन क्षेत्रों को वापस करना पड़ा जिन पर वह अपना अधिकार जमाए हुए था. इन राष्ट्रों की आर्थिक सैनिक स्थिति भी दयनीय हो गई. इंग्लैंड की स्थिति का कमजोर पड़ना

अब तक विश्व राजनीति में इंग्लैंड ब्रिटेन की प्रमुख भूमिका थी. वह एक शक्तिशाली राष्ट्र था. परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उसकी स्थिति दुर्बल हो गई. भारत सहित उसके सभी उपनिवेश स्वतंत्र हो गए तथा विश्व राजनीति में उस का दबदबा घट गया.

सोवियत संघ और अमेरिका की शक्ति में वृद्धि

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात जर्मनी, इटली, इंग्लैंड और फ्रांस के स्थान पर सोवियत संघ और अमेरिका का प्रभाव विश्व राजनीति में बढ़ गया. इन्हीं दोनों देशों के इर्द-गिर्द युद्धोत्तर राजनीतिक घूमने लगी.

साम्यवाद का तेजी से प्रसार

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात सोवियत संघ के नेतृत्व में साम्यवाद का तेजी से प्रसार हुआ. पूर्वी यूरोप के अनेक देशों एशियाई देशों चीन. उत्तर कोरिया इत्यादि देशों में साम्यवाद का प्रसार हुआ. साम्यवाद के प्रसार से फासीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों की कमर टूट गई. वह पुनः सिर उठाने लायक नहीं रहे.

विश्व का दो खेमो में विभाजन

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अमेरिका और सोवियत संघ विश्व के 2 महान शक्तिशाली देश बन गए. अमेरिका पूंजीवाद और सोवियत संघ साम्यवाद का समर्थक था. यद्यपि सोवियत संघ को युद्ध में अपार क्षति हुई थी तथापि उसने शीघ्र ही अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर ली. अमेरिका की स्थिति पहले से ही मजबूत थी. अतः यूरोपिय और एशियाई देश सहायता के लिए सोवियत संघ एवं अमेरिका की ओर आकृष्ट हुए. दोनों ने और विकसित और विकासशील देशों को अपने प्रभाव में लेना आरंभ कर दिया. फलतः विश्व के राष्ट्र दो खेमों में बंट गए. पूर्वी यूरोप चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्र सोवियत संघ के प्रभाव में आए. इसी प्रकार पश्चिमी यूरोप और एशिया के कुछ राष्ट्र पूंजीवादी व्यवस्था के समर्थक बनकर अमेरिका के प्रभाव में चले गए. सोवियत संघ और अमेरिका दोनों अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में लग गए. इससे शीत युद्ध आरंभ हुआ इसकी समाप्ति सोवियत संघ के विघटन के बाद ही हुई .

गुटनिरपेक्षता की नीति

इन दो खेमों में जाने की अपेक्षा कुछ एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों ने अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाए रखने का प्रयास किया। इसी प्रकार विश्व राजनीति में एक तीसरी शक्ति के रूप में असंलग्न राष्ट्रों का उदय हुआ। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का तेजी से प्रसार हुआ। इस आंदोलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

जर्मनी का विघटन

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी। पश्चिमी जर्मनी को इंग्लैंड अमेरिका और फ्रांस तथा पूर्वी जर्मनी को सोवियत संघ के संरक्षण में रखा गया। बर्लिन की दीवार बनाकर इसका विभाजन किया गया। विगत वर्षों में जर्मनी का पुनः एकीकरण कर बर्लिन की दीवार तोड़ दी गई है तथा जर्मनी पर से विदेशी आधिपत्य समाप्त कर दिया गया है।
वैज्ञानिक प्रगति

द्वितीय विश्वयुद्ध में वैज्ञानिक खोजों में प्रगति हुई। कुछ वैज्ञानिक आविष्कार तो मानव सभ्यता के लिए लाभदायक थे, परंतु कुछ के घातक परिणाम भी हुए। प्राकृतिक रबर के स्थान पर कृत्रिम रबर का विकास किया गया। संक्रामक बीमारियों से रक्षा के नए उपाय खोजे गए। अमेरिका में पेनिसिलिन का उत्पादन बड़े पैमाने पर हुआ। रक्त के प्लाज्मा निकालने की विधि खोजी गई जिससे घाव से होने वाली मृत्यु की संख्या में कमी आई। इसी प्रकार युद्ध के लिए बमवर्षक विमानों, जेट इंजन एवं रॉकेट का निर्माण किया गया। रेडार का भी विकास किया गया। सबसे महत्वपूर्ण था परमाणु बम का निर्माण, जिसका उपयोग अमेरिका ने जापान के विरुद्ध किया। युद्ध की समाप्ति के बाद परमाण्विक हथियारों के निर्माण की दौड़ विश्व में आरंभ हो गई है। इससे विश्व युद्ध का खतरा पुनः बज गया है।